

Annual Subscription fee 100/-

ओ३८

3rd May 2015

# ఆయ్ అర్థ జీవన్



# జీవన

సంస్కृతి సంరక్షణ వ సామాజిక పరివర్తన కా సంకలన  
హైంటి-తెలుగు బ్యాథాషా పత్ర పత్రిక

[www.namasthetelangaana.com/  
districts/mbr/](http://www.namasthetelangaana.com/districts/mbr/)

గురువారం | 16 ఏప్రిల్ 2015  
పేజీ 16

నమస్తు తెలంగాణ

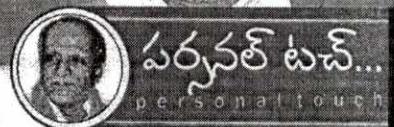
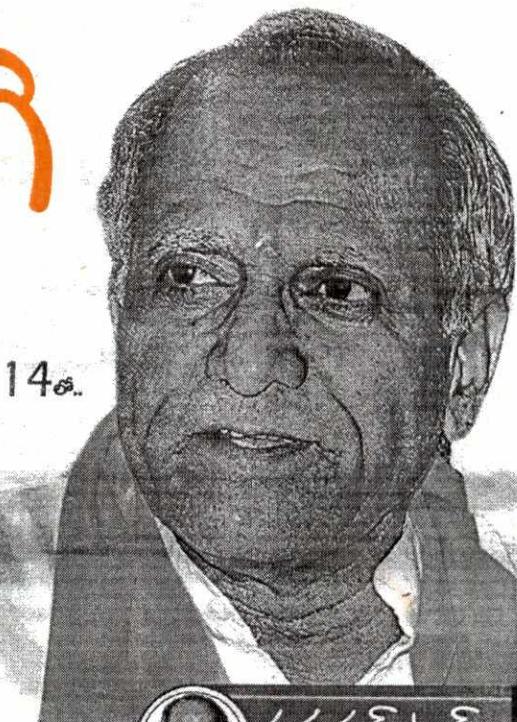


ముఖ్యమంత్రి నేతీగార్

# కర్మయోగి

- ఉపాధ్యాయుడి నుంచి ఉద్యమపోల్చే రథసారథిగా
- సమాజమే ఆయన కుటుంబం
- సకలజనులే 'ఆర్య' సపోర్టరులు
- ఆర్యసమాజీ కార్యాలయంలో లభిండర్స్‌గా విధులు
- తెల్లటి కుర్రా ప్రైజామూ ఇష్టం
- 'తమనామి జ్యోతిర్ధమయా' నట్టిన కొట్టిషన్
- ఇష్టమైన రోజు.. స్వరాప్తం ఏర్పడిన రోజు
- అభిమాన నేతలు.. గాంధీ, లగ్నివేం, కేసిఆర్

14..



అస్తులు అంతస్తులు కాదని ముక్కు మూసుకుని జనారణ్యానికి దూరంగా కొండ గుట్టలపై కూర్చుని

ధ్యానం చేసుకునేవారు కొండరైతే.. పేదప్రజలకునం అపుత్తణం పరితపిస్తూ కర్మయోగులుగా జనం కోసం జనం మధ్యలో ఉండేవారు మరికండరు. అలాంచివారిలో రెండోకోవుకు చెందినవారు విరల్రాష్ట ఆర్య, రాజకీయం, సామాజికం, ఆధ్యాత్మికం అన్ని కలగలసిన కర్మయోగి ఆయన. విజ్ఞత.. సహసం.. నిరాడంబర జీవన్సైలి.. సౌజన్యశీలి.. ప్రగతి వాది.. లాకీవాది.. తెలంగాణవాది.. ఐప్పుచూ.. ఇప్పనీ కలబోసుకున్న మంచి మనిషే.. విరల్రాష్ట ఆర్య, ప్రభుత్వ జానియర్, డిగ్రీ కళాలలో లెక్కర్స్‌గా విధులు నిర్వహిస్తూనే స్వామిఅగ్నివేష అనుపరుణిగా ఆర్యసమాజ ఉద్యమంలో చురుకుగా పాల్గొన్నారు. తన అమూల్య సమయాన్ని సామాజిక, ఆధ్యాత్మిక కార్యక్రమాలకే వెచ్చించాడు. పదవి విరమణ అనంతరం తెలంగాణ సాధన లక్ష్యంగా కేనీఆర్ స్ట్రోట్ పూర్తి కాలం ఉద్యమాల్చే చురుకుగా పాల్గొన్నారు.

- మహాయాలేనగర్ ప్రకించి, మమస్తు తెలంగాణ

ବ୍ୟାକ



ବୋବେ କୌଣସି  
ପେର୍ସନାଲାଟୁଚ

၁၃၅

ప్రారంభించిన 5:30కి వెళ్లినటం  
అంతాసామాన్ యిషా  
15 విమలాశ్రం  
కథిసును గుండులు లుప్పుత నాను  
ప్రారంభించి...

ఉంతస్తులు కాదని మనుషు మహాసుకుని జనరాధ్యుక్తి దూరంగా కొండ గుట్టలై కార్యాలయాలు కాధాను చేసుకోవాలు కొండక్కెత్తే... పేర ప్రజల కోసం అనుకుంచం పరిశిష్టలు జను కోసు నారి మధ్యలే ఉండేవారు మధ్యంచు. అంధాల్ని పరిశుభ్యాసాలుగా జను కోసు నారి మధ్యలే ఉండేవారు మధ్యంచు. రాజీయం, సామాజికం, అధ్యాత్మికం ఎవులు చెందినపారు.. విశ్వరూప అర్థాయిం, రాజీయం, సామాజికం, అధ్యాత్మికం అన్ని కలగలిని కర్తృయై అయిన. ఈపూర్వినిస్తే నుంచే అర్థ సమాజే కలాపాలక్ష్మీగ్రామా, సామాజిక ఉద్యమాలక్ష్మీగ్రామా పునిషేషన్ అర్థా కుషము ఒక్కటిమెట్టు ఎవుక్కుతూ తన జీవన నర్స్యాపులు జనిషితం కోసమేనని, పురు అవుపై మార్పు కళలు కొనిపెంచే లాటు, వారి క్షీల్లి దారసు తుఫానానికి క్షీమంచి లేకుండ క్షీమ కొనిపెంచే స్వస్తులు. అంధంలై పేరికం నుంచి ఉపాధ్యాయుడిగా, రాజీయ నాయకుడిగా ఎలాగాను. అయినకు బ్రాహ్మణుని మిషన్సు పారంలు, అర్థాయిలు అంకుశ్మీగ్రామాలలుతోంచి రాజీయు చౌర్మీ దూపంచు నీటి స్వరాశ్రమ సాధన అసంతుల అభివర్ణమే పోత్తు అయిన డీవెలోవ్ పారిగ్రామిక్ పిల్లలు. సమాజము కుటుంబముని, సమాజమును తన సహాదులని తంపి వైపోక క్షీమంలో అధుగుపెట్టండే సమాజము వింతొపు అర్థా..!

ప్రా. డిమ్మన్, లోజన్ దేనాడీ.  
విషయ కుర్చీ..

చిన్నప్ప నుంచి కొన్ని వేగాద్ది, 9, 10 తరువాత సుమారు 12 వరకు వేగాద్ది ఉన్నామి. 1962లో హైదరాబాదు నుండి ప్రాంతానికి వెళుసు. 1966లో మామియా సాఫ్ట్ ను ఎంచి సుల్తాన్ లో అన్ని ప్రాంతాలకు ప్రసారించినప్పుడు.

సాధారణంగా ఒక గ్రామం గుర్తున్న వివరాలను ప్రాంతానికి అంతర్జాలం కల్పించాలి. సాధారణంగా, సాధారణంగా, రాష్ట్రాలలో సాధారణంగా, సాధారణంగా.

ప్రశ్నలు వివరాలు. ఈ ప్రశ్నలు వివరాలు. ఈ ప్రశ్నలు వివరాలు.

Date: 03-05-2015



విభిన్న సంధర్మాలలో దేశ ప్రముఖులతో విఠల్ రావు ఆర్య  
देश के प्रमुख लोगों के साथ अनेक संदर्भों में लिए चित्रों में श्री विठ्ठलराव आर्य





विधीनु सौंधरांगली देश प्रमुख्यलक्ष्मि विठ्ठल राव अर्य  
देश के प्रमुख लोगों के साथ अनेक संदर्भों में लिए चित्रों में श्री विठ्ठलराव आर्य





विभिन्न संस्थानों देश प्रमुखलाते हीरह राव आर्य  
देश के प्रमुख लोगों के साथ अनेक संदर्भों में लिए चित्रों में श्री विघ्नराव आर्य





విభిన్న సంఘర్షణలలో దేశ  
ప్రముఖులతో విరల్ రావు ఆర్య



देश के प्रमुख लोगों के साथ अनेक  
संदर्भों में लिए चित्रों में श्री  
विद्वलराव आर्य

मई दिवस पर

## सच्चे आध्यात्मिक श्रम से अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

ईश्वर ने मनुष्य को ऐसा प्राणी बनाया है जिसमें शक्ति वा ऊर्जा की प्राप्ति के लिए इसे भोजन की आवश्यकता पड़ती है। यदि इसे प्रातः व सायं दो समय कुछ अन्न अर्थात् रोटी, सब्जी, दाल, कुछ दुग्ध व फल आदि मिल जायें तो इसका जीवन निर्वाह हो जाता है। भोजन के बाद वस्त्रों की आवश्यकता भी होती है। भोजन व वस्त्रों को प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही निवास के लिए अपना व किराये का घर भी चाहिये होता है। अब इन सबके लिए धन अर्जित करने के लिए उसे श्रम करना पड़ता है। यदि नहीं करेगा तो धन प्राप्त नहीं होगा जिसका परिणाम होगा जीवन निर्वाह में बाधा। अब वह क्या कार्य करे कि जिससे आवश्यकता के अनुसार धन प्राप्त हो? इसके लिए अनेक कार्य हैं जिन्हें वह कर सकता है। इसके लिए शिक्षा व किसी कार्य के अनुभव की आवश्यकता होती है। माता-पिता इसी कारण अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा देते हैं जिससे वह कोई अच्छा सम्मानित कार्य कर अपनी व अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

आजकल बच्चे कक्षा 12 तक पढ़—लिख कर आगे डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजमेन्ट आदि के कोर्स करते हैं। इसमें उत्तीर्ण होने पर अच्छी नौकरी मिल जाती है जिससे जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होने के साथ मनुष्य समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत करता है। जो लोग इन महगें कोसाँ व उपाधियों को प्राप्त नहीं कर पाते वह इण्टर, स्नातक व स्नात्कोत्तर उपाधियां प्राप्त कर व कुछ अन्य प्रशिक्षण आदि प्राप्त कर सरकारी, निजी कार्य या प्राइवेट नौकरियां करते हैं। कुछ अशिक्षित, अल्प शिक्षित और शिक्षित भी कष्टि या श्रमिक का कार्य भी करते हैं और इनमें भी कुछ कार्यों को सीख कर अच्छा धन उपार्जित करते हैं। हमने देखा है कि कई हलवाई, प्रापर्टी डिलर, दूध के व्यापारी, खिलाड़ी, कलाकार व राजनीति से जुड़े व्यक्ति आर्थिक दष्टि से अत्यन्त सम्पन्न हैं। इतने सम्पन्न हैं कि ऊँची शैक्षिक योग्यता रखने वाले व बड़े पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति भी नहीं हैं। हमारा यह लिखने का तात्पर्य केवल यह बताना है कि नाना प्रकार के कार्यों को करके लोग धन कमाते हैं और फिर उसके अनुसार सुविधा सम्पन्न या साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। जो व्यक्ति जो कार्य कर रहा है उसे उसका उचित परिश्रमिक या वेतन मिलना चाहिये। कहीं कुछ अधिक मिलता है और कहीं बहुत कम, अर्थात् श्रम का शोषण हुआ करता है। इस शोषण को समाप्त करने और श्रम के दिन, समय व अवकाश आदि की सुविधा दिलाने के लिए श्रम संगठन बने हुए हैं। इन संगठनों ने मजदूर व श्रमिकों की उनकी अनेक न्यायोचित मांगे सरकार व उद्योगपतियों आदि से स्वीकार करवाई हैं जिनसे मजदूरों व अन्य सेवारत मनुष्यों का जीवन सुखद बना है। इन सभी प्रकार के व्यवसाय जो मनुष्य करते हैं, उनमें देखा जाता है कि मनुष्य अपनी योग्यता व श्रमशक्ति से कार्य करता है जिसका उसे धन के रूप में कमपैन्शेसन, पारिश्रमिक, मजदूरी या वेतन मिलता है। मनुष्य जो श्रम के द्वारा कार्य करते हैं वह दूसरे मनुष्यों के काम आने वाली वस्तुओं व सुविधाओं आदि से जुड़ा होता है। यहां हम इन सभी कार्यों से भिन्न आध्यात्म से जुड़े श्रम की भी कुछ चर्चा कर रहे हैं।

आध्यात्म में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि यह संसार किसके द्वारा, किसके लिए व किस वस्तु से बना है। इसके बाद मनुष्य विषयक कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों, कि मैं कौन हूं, मेरा उददेश्य क्या है और उस उददेश्य की प्राप्ति के साधन और साध्य क्या है? इन प्रश्नों पर विचार किया गया है और इनके उत्तर दूँहे गये हैं। इन प्रश्नों और इनके उत्तरों से आज का सारा संसार अनभिज्ञ है, यह आश्चर्य एवं दुःख की स्थिति है। देश विदेश के सभी मनुष्यों को इन प्रश्नों से कोई भी सरोकार प्रतीत नहीं होता। हमारा अध्ययन यह बताता है कि यह सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, इन पर प्रत्येक बुद्धिमान कहे जाने वाले मनुष्य को अवश्य ही विचार करना चाहिये। या तो वह स्वयं इनके उत्तर बतायें अथवा दर्शनों आदि ग्रन्थों में तर्क, युक्ति व ऊहापोह से जो उत्तर खोजें गये हैं, उनका खण्डन करे या यथावत् स्वीकार करे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो फिर यही माना जायेगा कि वह व्यक्ति मनुष्य = मननशील नहीं है। अतः ऐसे मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु समान है जिसका उददेश्य पशुओं की तरह केवल इन्द्रिय सुख के कार्य करना मात्र है। इन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर हम दे रहे हैं। संसार में तीन पदार्थों ईश्वर, जीव व प्रकृष्टि का अस्तित्व है जो नित्य, अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, अमर, अविनाशी गुणों वाले हैं। ईश्वर ने प्रकृष्टि को उपादान कारण के रूप में प्रयोग कर इस संसार को बनाया है। ईश्वर व जीव अर्थात् जीवात्मायें चेतन तत्व हैं। ईश्वर सत्य-चित्त-आनन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वातिसूक्ष्म पदार्थ है। जीवात्मा

एक चेतन तत्व, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, अजर, अमर आदि गुणों वाला है जो अपने कर्मानुसार बार बार जन्म लेता है व मष्ट्यु को प्राप्त होता है। मष्ट्यु के बाद पुनः इसका जन्म होता है जिसे पुनर्जन्म के नाम से जानते हैं। मैं कौन हूं इस प्रश्न का उत्तर है कि मैं एक जीवात्मा हूं जिसका स्वरूप पूर्व पंक्ति में प्रस्तुत किया गया है। अब मेरा व हमारा उद्देश्य क्या है? इसका उत्तर देते हैं। उद्देश्य जीवात्मा का उन्नति करना है। उन्नति अच्छे कर्मों को करके होती है। जैसे विद्यार्थी को अपने विषय की पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त कर परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। इसी प्रकार जीवात्मा को अच्छे कर्म करके जिनमें सेवा, परोपकार, यज्ञ, माता-पिता-आचार्य व अतिथियों की सेवा आदि कार्यों सहित नियत समय में ईश्वर को जानकर उसके सत्यस्वरूप में अवस्थित हो उसकी स्तुति व प्रार्थना को करना होता है। इन कार्यों को करके जीवात्मा की उन्नति होती है। मनुष्य की वह अध्यात्मिक उन्नति किस प्रकार की है? वह ऐसी है कि इससे समस्त दुःखों की निवृत्ति स्वार्जित ज्ञान व ईश्वर द्वारा होती है। इससे मनुष्य बार बार के जन्म व मष्ट्यु के चक से छूटकर लभी अवधि के लिए मुक्त होकर ईश्वर के सान्निध्य में रहकर सुख भोगता है। यदि मजदूरी व श्रम की तरह अध्यात्मिक श्रम की बात करें तो अध्यात्मिक श्रम ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना सहित धार्मिक लाभों सुख, शान्ति, जन्मोन्नति व मोक्ष के लिए किए जाने वाले कार्य हैं। जो लाभ एक मजदूर व व्यवसायी को भोजन, आवास, वाहन, पूजी, यात्रा आदि से प्राप्त होता है वह व उससे अधिक सुख व आनन्द अध्यात्मिक श्रम अर्थात् ईश्वरोपासना, सेवा व परोपकार आदि कार्यों से आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्यों को मिलता है। यह बात केवल काल्पनिक नहीं है अपितु इसका विस्तृत वर्णन एवं कियात्मक ज्ञान हमारे वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। जो व्यक्ति इस आध्यात्मिक श्रम व साधना को करता है उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति सांसारिक जीवन जीने वाले गृहस्थी व सज्जन पुरुषों से प्राप्त साधनों व धन आदि से हो जाती है। हम स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उन्होंने 22 वर्ष की अवस्था में अपने पिता का सुख-सुविधाओं से सम्पन्न घर छोड़ा था। उसके बाद वह मृत्यु पर्यन्त देशाटन करते हुए योग्य शिक्षकों, गुरुओं, आचार्यों, योगियों व यतियों आदि सहित सद्ग्रन्थों की खोज करते रहे और उनसे ज्ञान आदि पदार्थ मिलते थे उसका अभ्यास व अध्ययन कर उन्हें स्मरण कर लेते थे। उनकी भौतिक पूजी मात्र एक कौपीन या लंगोट थी। त्याग भावना इस कदर थी कि उन्होंने अपने लिए दूसरा लंगोट तक नहीं लिया था। भोजन कभी मांगा नहीं, यदि किसी ने पूछा और स्वेच्छा से प्रदान किया, तो कर लेते थे। उनका स्वास्थ्य एक आदर्श मनुष्य के जैसा था और बल भी सामान्य व बलवानों से अधिक ही था जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्हें भोजन भी मिलता ही था। जिस प्रकार से धनाभाव होने पर हम निराश हो जाते हैं, ऐसा महर्षि दयानन्द के जीवन में देखने को नहीं मिलता। वह सदैव सन्तुष्ट रहते थे। गुरु की आज्ञा से जब वह सन् 1863 में कार्य क्षेत्र में उत्तरे तो उसके बाद उनके इतने सहायक बन गये कि उनकी सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे। सभी सांसारिक लोग जो उनके विचारों से प्रभावित होते थे, जिसमें कई स्वतन्त्र राज्यों के राजा-महाराजा भी थे, वह उनका आतिथ्य कर प्रसन्न होते थे और उनके द्वारा सम्पादित धर्म प्रचार के कार्यों में सर्वात्मा सहयोग भी करते थे। स्वामीजी ने अनेक लोगों को लेखक, पाचक, सेवा के साथ पाठशाला के संस्कृत शिक्षक, परोपकारिणी प्रेस के प्रबन्धक व अन्य कर्मचारियों के रूप में व्यवसाय भी दिया हुआ था और अपने सहायक कर्मचारियों को उचित व सन्तोषजनक वेतन देते थे और सबका सम्मान भी करते थे। इनके जीवन से शिक्षा लेकर सभी धर्म सम्बन्धी कार्यों को जिसमें योग प्रचार भी समिलित कर सकते हैं, अध्यात्मिक श्रम में समिलित कार्य हैं और इससे जीवन को सुखी व निरोग बनाया जा सकता है। मई दिवस को ध्यान में रखते हुए इस लेख में हमने सांसारिक श्रम व आध्यात्मिक श्रम की चर्चा की है। हम अनुभव करते हैं कि आज के आधुनिक युग व परिस्थितियों में इन दोनों प्रकार की जीवन शैलियों का समन्वय ही सच्चा आध्यात्मिक-श्रम से युक्त जीवन हो सकता है। हम सांसारिक शिक्षा से ज्ञान, योग्यता व अनुभव प्राप्त करें और व्यवसाय के लिए किसी अच्छे कार्य व सेवा को चुने। उससे धन उपार्जन करें और इसके साथ अपने जीवन में यथासमय ईश्वरोपासना, यज्ञ-अग्निहोत्र, सेवा, परोपकार, माता-पिता-आचार्य-अतिथि सेवा आदि के कार्य भी करते रहें जिससे सभी प्रकार के आध्यात्मिक लाभ भी हमें प्राप्त हों। आज की परिस्थितियों में यही सन्तुलित जीवन कहा जा सकता है। धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियों भी फैली हुई हैं जिससे बचने के लिए विवेक की आवश्यकता है। यह विवेक महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों सहित अन्य सद्ग्रन्थों के अद्ययन से प्राप्त होगा। अध्यात्म वा सद्धर्म की जीवन में उपेक्षा बहुत हानिकारक व महर्गीं सिद्ध होगी। इस पर सभी को व्यापक दृष्टि से विचार कर सही मार्ग का चयन करना और उसी पर चलना जीवन का ध्येय होना चाहिये।

## 'महर्षि दयानन्द ने खण्डन—मण्डन, समाज सुधार व वेद प्रचार क्यों किया?'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 में दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द से अध्ययन पूरा कर कार्य क्षेत्र में पदार्पण किया था। उन दिनों में देश में अज्ञान, धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास, कुरीतियां व अधर्म इतना अधिक बढ़ गया था कि इन बुराईयों से मुक्त होने का न तो किसी के पास कोई उपाय था और न ही कोई प्रभावशाली प्रयास ही किसी के द्वारा किया जा रहा था। यदि महर्षि दयानन्द वह कार्य न करते जो उन्होंने किए हैं, तो देश व समाज की स्थिति और कहीं अधिक विषम व जटिल होती जिसका लाभ कुछ स्वार्थी व समाज के शत्रुओं को मिलता परन्तु वैदिक धर्म व संस्कृति की अपूरणीय क्षति होती। यह निश्चित है कि हमारा देश व समाज आज जिस स्थिति में है, वह वैसा कदापि न होता अपितु इससे कहीं अधिक पिछड़ा, कमजोर व विद्रूप होता। महर्षि दयानन्द ने अपनी सभी धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं से सम्बन्धित एक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है जिसका नाम सत्यार्थ प्रकाश है। इस ग्रन्थ में उन्होंने प्रथम 10 समुल्लासों में अपनी वेदों पर आधारित सभी मान्यताओं को प्रस्तुत किया है। इसके बाद अन्तिम चार समुल्लासों में उन्होंने देश व विदेशी मत—मतान्तरों व धर्मों की मिथ्या मान्यताओं को प्रस्तुत कर उनकी समीक्षा वा खण्डन तर्क, युक्ति, प्रमाण आदि से किया है जो कि असत्य के छोड़ने और सत्य के ग्रहण करने के आवश्यक व अपरिहार्य है। यदि मनुष्य अपने असत्य को जानकर उसे छोड़ेगा नहीं तो उसका पतन तो अवश्यम्भावी है ही साथ हि उसकी धार्मिक, आत्मिक, बौद्धिक व सामाजिक उन्नति कभी नहीं हो सकती। सर्वांगीण उन्नति का एकमात्र उपाय व साधन सत्य को ग्रहण करना व असत्य को छोड़ना है और इसके लिए अपने व दूसरे के असत्य का खण्डन व अपने व दूसरों के सत्य का मण्डन व प्रशंसा भी आवश्यक है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यावर्तीय अर्थात् भारत के मत—मतान्तरों का खण्डन—मण्डन है। मनुष्य की उन्नति के लिए यह खण्डन व मण्डन अनिवार्य व अपरिहार्य है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि जैसे एक अध्यापक अपने शिष्य व विद्यार्थी को सत्य बातों का ज्ञान कराता है और उसके जीवन में जो असत्य आचरण, व्यवहार व अज्ञान है, उसे जता व बता कर उसे छुड़वाता है। डाक्टर भी रोगी को रोग के कारण बताकर उसका खानपान ठीक करने के साथ उसका आचरण व व्यवहार भी ठीक करता है और उसे ओषधियां इस लिए देता है कि जिससे मिथ्या व असत्य कर्मों, खानपान व दिनचर्या की अनियमितता आदि अवगुणों के कारण उत्पन्न रोग दूर हो जायें। मिथ्या विचारों व मान्यताओं का खण्डन—मण्डन करने से पूर्व महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास की एक अलग से मार्मिक अनुभूमिका लिखी है। वह लिखते हैं कि यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत (वर्तमान में धर्म) चलाया। उन सब मतों में चार मत, अर्थात् जो वेदविरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों के मूल हैं। वे कम से एक के पीछे दूसरा तीसरा चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं है। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो, इसलिये (महर्षि दयानन्द ने) यह ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) बनाया है। वह आगे लिखते हैं कि जो जो इस (ग्यारहवें) समुल्लास में सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन लिखा है, वह सबको जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी (महर्षि दयानन्द की) बुद्धि, जितनी विद्या, और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है उसको सब के आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है। क्योंकि गुप्त व विलुप्त हुए विज्ञान का पुनः मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इस सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जायगा। इसके पश्चात् सबको अपनी—अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण करना और असत्य मत का छोड़ना सहज होगा। महर्षि दयानन्द जी आगे कहते हैं कि इनमें से जो पुराण आदि ग्रन्थों में शाखा—शाखान्तर रूप मत आर्यावर्त देश में चले हैं, उनका संक्षेप से गुण—दोष इस 11 वें समुल्लास में दिखाया जाता है। इस मेरे कर्म से यदि पाठक उपकार न माने तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का ही है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने—कराने के लिए है, न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मत—मतान्तर के विवाद से जगत् में जो—जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे, उनको पक्षपातरहित विद्वज्जन जान सकते हैं। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात वह यहां यह भी कहते हैं कि जब तक इस मनुष्य जति में मिथ्या मतमतान्तरों का परस्पर विरुद्ध वाद न छूटेगा, तक तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष कर विद्वज्जन ईर्ष्या—द्वेष छोड़कर सत्यासत्य का निर्णय

करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें, तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन (मत-मतान्तरों के) विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फँसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फँसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें, तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति महर्षि दयानन्द जी ने अपने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की पूर्ति पर 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' शीर्षक के अन्तर्गत दी है। खण्डन-मण्डन विषयक ग्यारहवें समुल्लास की अनुभूमिका की समाप्ति पर वह ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें।

महर्षि दयानन्द जी के आशय व अभिप्राय को जान लेने के बाद अब हम लेख के शीर्षक पर संक्षिप्त विचार करते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने कार्यकाल में असत्य विचारों व मान्यताओं का खण्डन व सत्य मान्यताओं का मण्डन किया। झूठ को झूठ और सत्य को सत्य कहना क्या गलत है? हम समझते हैं कि उनके इस खण्डन कार्य को कोई निष्पक्ष व्यक्ति बुरा व गलत नहीं कह सकता। महर्षि दयानन्द ने वेद, तर्क, युक्ति व अन्य प्रमाणों के आधार पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, बालविवाह, जन्मना जाति व्यवस्था, ऊंच-नीच, छुआ-छूट, अशिक्षा, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों आदि का खण्डन किया। इसके साथ ही उन्होंने वेद आदि विद्या के ग्रन्थों के अध्ययन, संस्कृत व हिन्दी भाषा को सीखने व उसके प्रयोग करने, निराकार-सर्वशक्तिमान-सच्चिदानन्द ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना, अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि, विधवा विवाह, गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था आदि का समर्थन किया। वह स्त्री व शूद्रों की शिक्षा व समान अधिकारों के समर्थक थे तथा सामाजिक विषमता के विरोधी थे। अतः उनका यह खण्डन व मण्डन किसी भी प्रकार से अनुचित न होकर समाजोन्नति व देशोन्नति के लिए अपरिहार्य है। महर्षि दयानन्द ने इस खण्डन व मण्डन के साथ समाज सुधार के एक नहीं अपितु सभी प्रकार के कार्य किये। स्वामीजी ने स्त्री व शूद्र आदि सबको वेदाध्ययन का अधिकार दिया जो कि विगत 5000 वर्षों से बन्द था। उन्होंने गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था की वकालत की और जन्मना जाति व्यवस्था के विरोध सहित युवक व युवती के विवाह भी गुण-कर्म व स्वभाव पर आधारित करने की सलाह दी। आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए उन्होंने ईश्वर के सत्यस्वरूप का प्रचार किया। उनके अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वधार, सर्वश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यमी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता एवं एकमात्र ध्यान व उपासना के योग्य है। इन गुणों के अनुसार ही उन्होंने ईश्वर का ध्यान करने वा उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने का प्रचार किया। महर्षि दयानन्द ने देश को प्रार्थना व स्तुति की सम्बोधन, आर्यभिविनय, सोलह संस्कार कराये जाने हेतु संस्कार विधि एवं वैदिक सिद्धान्तों को जानने के लिए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अनेक विषयों की पुस्तकें लिख कर व प्रकाशित कर प्रदान की। उनके यह सभी कार्य समाज सुधार के प्रेरक, संर्वर्धक व उन्नति के कारक हैं। इन्हीं खण्डन-मण्डन व समाज सुधार के कार्यों में वेद प्रचार का कार्य भी निहित है। वेद प्रचार का अर्थ वेदों के ज्ञान का विश्व के मानवमात्र में समान रूप से प्रचार व प्रसार है। वेदों के ज्ञान के प्रकाश से आलोकित आत्मा का अभ्युदय होकर उसे निःश्रेयस की प्राप्ति होती है जो कि संसार की अन्य किसी जीवन शैली व मत-मतान्तरों की पूजा पद्धति से सम्भव नहीं है। तर्क व युक्तियों से सिद्ध मोक्ष का वर्णन ही किसी धर्म पुस्तक में उपलब्ध नहीं होता तो फिर उनके अध्ययन व आचरण से मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकता है? इसका अनुमान तुलनात्मक अध्ययन करने पर सभी मतों के सुहृद जनों को स्वतः होता है। सामान्य पठित मनुष्यों की सहायता के लिए महर्षि दयानन्द ने ईश्वरीय ज्ञान वेदों का संस्कृत व हिन्दी भाषा में भाष्य वा सरल अनुवाद भी किया है जिसे सभी को पक्षपात छोड़कर पढ़ना चाहिये। वेद ईश्वर की वाणी होने के कारण सबके लिए हितकर व सबका कल्याण करने वाली है। देश व विश्व की उन्नति का आधार मिथ्या मत-मतान्तरों का पराभव और विश्व में एक सत्य मत, जिसका पर्याय वेदमत है, का उदय होना ही हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने जब वेद भाष्य का आरम्भ किया था तो अनुमान किया था कि जब उनका किया जाने वाला वेदभाष्य पूरा हो जायेगा तो संसार से अज्ञान तिमिर विनष्ट होकर संसार में धर्म व ज्ञान के क्षेत्र में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसको रोकने, हटाने व ढापने का सामर्थ्य किसी मत-मतान्तर के मानने वालों में नहीं होगा। आज हमें वेद ज्ञान तो उपलब्ध है परन्तु मत-मतान्तरों द्वारा फैलाये गये व फैलाये जाने वाले अज्ञान व अन्धकार को छोड़ने के लिए सुविधा भोगी व अभावग्रस्त मनुष्य तत्पर ही नहीं हो पा रहे हैं। संसार में जिसका आदि व आरम्भ होता है उसका अन्त भी अवश्य होता है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। महाभारत काल से भोगवादी संस्कृति व जीवनशैली का आरम्भ हुआ था। आरम्भ होने के कारण इसका अन्त भी अवश्य होना ही है। वह दिन अवश्य आयेगा जब भोगवाद व मिथ्या मत-मतान्तरवाद का क्षय होगा और सत्य वैदिक धर्म का सर्वत्र आचरण व व्यवहार होगा। वह दिन महर्षि दयानन्द द्वारा आरम्भ खण्डन-मण्डन-समाज-सुधार व वेद प्रचार की सुखद परिणति का दिन होगा। हमें बस को जानने में तत्पर रहना, उसे न छोड़ना और उसका यथाशक्ति प्रचार करना है जिससे लक्ष्य शीघ्र प्राप्त हो सके। इन्हीं शब्दों के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

# 'वर्ण और जन्मना जाति व्यवस्था तथा हमारा वर्तमान समाज'

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

उपलब्ध ज्ञान के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अमैथुनी सषष्टि के प्रथम दिन ही जगत पिता ईश्वर ने अपनी शाश्वत् प्रजा मनुष्यों के कल्याणार्थ श्रेष्ठ पवित्र आत्माओं जो अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार ऋषि कहे जाते हैं, को कमशः चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अर्थवेद का ज्ञान दिया था। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वज्ञ होने से सर्व प्रकार से पूर्ण है, उसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। अतः उसका दिया हुआ ज्ञान भी हर दण्ड से पूर्ण होना चाहिये। सषष्टि की रचना देखकर विदित होता है कि ईश्वर पक्षपात रहित है और न्यायकारी है। इसके साथ वह दयालु और करुणा का सागर भी है। अतः ईश्वर ने प्रथम चार ऋषियों को अपने अनुरूप श्रेष्ठ बुद्धि से भी सम्पन्न किया था। चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान प्राप्त होने पर इन ऋषियों ने ब्रह्माजी को चारों वेदों का ज्ञान कराया। स्वभाविक है कि जब एक-एक ऋषि ने ब्रह्मा जी को एक-एक वेद का ज्ञान कराया होगा तो अन्य तीन ऋषियों ने भी वहीं उपस्थित होने के कारण उसे सुना व समझा होगा। इस प्रकार ब्रह्मा जी जहां चारों वेदों के ज्ञाता हुए, वहीं अन्य चारों ऋषि भी चारों वेदों के ज्ञाता हो गये थे। इस प्रक्रिया के सम्पन्न होने के बाद इन पांच ऋषियों द्वारा सभी स्त्री व पुरुषों को चारों वेदों का ज्ञान कराना सम्भावित है। यह किस विधि से कराया गया, इस विषय में तो केवल इतना ही कहा जा सकता है कि प्रवचन, उपदेश आदि के द्वारा कराया होगा। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आदि सषष्टि में कुछ काल बाद ही पहली अमैथुनी पीढ़ी के सभी स्त्री व पुरुष वेद ज्ञान से सम्पन्न हो गये थे। इसका कारण यह है कि जहां गुरु व शिष्य दोनों उत्तम हों, गुरुजन विद्यावान व श्रेष्ठ आचरण वाले हों और शिष्य विद्यार्जन के लिए अत्यन्त उत्सुक हों तो वहां ज्ञान का आधान व प्रचार शीघ्र व सरलता से हो जाता है।

सषष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान के सभी स्त्री व पुरुषों द्वारा ग्रहण लेने की प्रक्रिया के पूरी होने के बाद सामाजिक व्यवस्था कैसी हो? यह समस्या आदि मनुष्य समाज के सामने आई होगी। इसका हल करने के लिए उनके पास सबसे बड़ा साधन वेद ज्ञान ही था। इसके लिए वेद का मन्त्र 'ब्राह्मणोऽस्य खमासीद् बाहू राजन्यः कष्टः। ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यास् शूद्रो अजायत।। (यजुर्वेद 31/11) का मार्गदर्शन उपलब्ध था जिसका पूरा लाभ लिया गया। इस वेदमन्त्र सहित सभी ऋषियों और मनुष्यों का बौद्धिक ज्ञान व उनकी क्षमतायें भी उच्च कोटि की थीं। उन्हें ज्ञात था कि हमें अपनी सन्ततियों के लिए अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है। अन्न, फलों व दुग्धादि के उत्पादन व उपलब्धता के लिए कष्टकों की व वितरण के लिए वैश्यों की आवश्यकता है। समाज के सभी लोगों की हिसंक पशुओं व आचार विहीन लोगों के सुधार के लिए बलवान व बुद्धिमान रक्षकों तथा न्यायाधीशों की आवश्यकता है। इसी प्रकार से शिक्षकों, कष्टकों, वणिकों व रक्षा व न्याय व्यवस्था से जुड़े लोगों को सहायकों की आवश्यकता भी अनुभव की गई होगी। इसके लिए गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार चार वर्ण व श्रेणियां बनाई गई थीं जो अज्ञान, अन्याय व अभाव का नाश करें और चतुर्थ वर्ण इनके कार्यों में सहयोग प्रदान करें। इस व्यवस्था को ही वर्णाश्रम व्यवस्था का नाम दिया गया। वर्ण का अर्थ चुनाव करना होता है। जिसने ज्ञानी व शिक्षक अथवा विद्या से जुड़े कार्य करने का संकल्प लिया और जो उस योग्यता को प्राप्त करने में सफल हुआ, उसे गुरुकुल के आचार्यों व समकालीन ऋषियों ने सामूहिक रूप से ब्राह्मण नाम से सम्बोधित किया व सम्मान दिया। इसी प्रकार से समाज की आवश्यकता के अनुरूप अन्य वर्णों को क्षत्रिय व वैश्य नामों से अभिहित किया गया। जो लोग अधिक ज्ञान सम्पन्न न हो सके उन्हें अन्य तीन वर्णों के साथ सहयोग करने के लिए शूद्र व श्रमिक नाम से सम्बोधित किया गया। यह व्यवस्था इतनी उत्तम थी कि यह सषष्टि के आरम्भ से

महाभारत काल तक स्थापित रही। महाभारत काल के बाद इसमें व्यवधान उपस्थित हुए और हमारे पण्डितों ने इसे जन्म पर आधारित व्यवस्था बना दिया। विचार करने पर इस जन्मना व्यवस्था में ब्राह्मण व पण्डित वर्ग का अज्ञान व स्वार्थ दोनों ही प्रतीत होता है।

मध्यकाल में ब्राह्मण व पण्डित वर्ग में अज्ञान बढ़ा और तब मिथ्या अन्धविश्वास, कुरीतियां व सामाजिक विषमताओं ने जन्म लिया। दुर्भाग्य से क्षत्रियों व वैश्यों के वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन के अवसर भी कम हुए परन्तु शूद्र परिवार में जन्में बालक व बालिकाओं सहित सभी वर्णों की स्त्रियों को एक कल्पित वाक्य 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' कहकर वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया जिसका देश व समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ा। इससे देश व समाज निर्बल होता गया और व्यक्ति विशेष दुःख व अभाव का शिकार होते गये। यद्यपि महाभारत काल के बाद हमारे देश में महापुरुषों की कमी नहीं रही परन्तु इनमें पूर्ण वेदज्ञानी कोई नहीं था। अनेक प्रसिद्ध व प्रतापी राजा हुए हैं जिनकी कई सहस्र वर्षों के शासन की सूची भी उपलब्ध है। स्वाभाविक है कि यदि एकाधिक अच्छे विद्वान हों तो शिक्षा व्यवस्था को पुनः स्थापित किया जा सकता है परन्तु यदि विद्वानों की भरमार हो और सभी अज्ञान व स्वार्थ से ग्रसित हों तो फिर समाज व देश का उत्थान सम्भव नहीं है। ऐसा ही मध्य काल के दिनों में देखने को मिलता है। स्वामी शंकराचार्य, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, सन्त कबीर, सन्त तुलसीदास, मीराबाई, गुरुनानक देव जी, गुरु गोविन्दसिंह, राजा राममोहन राय आदि अनेक महान पुरुष हुए परन्तु समाज की स्थिति में न्यूनादि तक सुधार तो हुआ परन्तु किसी ने सभी धार्मिक व सामाजिक समस्याओं का ऐसा हल प्रस्तुत व प्रचारित नहीं किया जैसा कि जैसा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वेदों के ऋषि स्वामी दयानन्द जी ने किया था। महर्षि दयानन्द जन्मना वर्ण व्यवस्था को नहीं मानते थे। वह शास्त्रीय उदाहरणों एवं अपने प्रबल तर्कों से जन्मना वर्णव्यवस्था का खण्डन करते थे। वह वेद और मनुस्मृति वर्णित गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे। जन्मना वर्ण व्यवस्था को वह एक स्थान पर "मरण व्यवस्था" के नाम से उल्लेख करते हैं। हम यह अनुभव करते हैं कि यद्यपि वैदिक काल में प्रचलित वर्ण व्यवस्था को वर्तमान युग में पुनर्स्थापित तो नहीं किया जा सकता परन्तु आर्य समाज में एक प्रकार से कुछ-कुछ यह स्थापित हुई सी दीखती है। आर्य समाज ने सभी वर्ण व जन्मना जाति के बन्धुओं को जिसमें हमारे दलित परिवारों के भाई व बहिन भी सम्मिलित थे, गुरुकुलों में अध्ययन व अध्यापन का अधिकार दिया। वह संस्कृत व्याकरण व शास्त्रों को पढ़कर बड़े-बड़े विद्वान बने जिनके नाम के आगे पण्डित शब्द का प्रयोग व उच्चारण किया जाता रहा है और यह एक नई परम्परा का सूत्रपात है जो कि महर्षि दयानन्द के समय व उससे पहले भारत में कहीं भी नहीं थी। हमारे प्रिय दलित भाई जो गुरुकुल में पढ़े हैं, उन्हें भी सर्वत्र पण्डितजी या आचार्यजी ही कहकर सम्बोधित करते हैं। यह वर्ण व्यवस्था के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी सामाजिक कान्ति है जो महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की देन है। यह वस्तुतः युग परिवर्तन है। इस सीमा तक तो आर्य समाज ने इस जन्मना जाति व्यवस्था को दूर किया ही है। आर्यसमाज ने ही समाज में गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित विवाहों का समर्थन किया जिससे इनका शुभारम्भ होकर आज तीव्रगति से ऐसे विवाह हो रहे हैं जिन्हें आज कल प्रेम विवाह के नाम से जाना जाता है जिसमें प्रचलित वर्ण व जाति का ध्यान नहीं रखा जाता, गुण-कर्म-स्वभाव को ही महत्व दिया जाता है। आज कल यह जाति व्यवस्था इतनी ढीली पड़ गई है कि अधिकांश माता-पिता अपनी सन्तानों के लिए गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित श्रेष्ठ वर व वधु का चयन कर विवाह सम्पादित करते हैं। यह सब महर्षि दयानन्द व उनके आर्यसमाज की ही देन है।

महर्षि दयानन्द अपने समय के पहले ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने हिन्दुओं के प्रमुख शास्त्रीय ग्रन्थ वेद के आधार पर जन्मना जाति का विरोध किया और अपने जीवन व व्यवहार से उसे अग्राह्य व निषिद्ध किया। उन्होंने एक बार एक नाई द्वारा भोजन के रूप में रोटी प्रस्तुत करने पर पौराणिक पण्डितों के विरोध

। के बावजूद उसे स्वीकार कर सबके समुख उसे ग्रहण किया और तर्क प्रस्तुत किया कि रोटी नाई की नहीं अपितु गेहूँ की है। अन्न व भोजन यदि सच्चाई, धर्म व परिश्रम पूर्वक धन कमाकर प्राप्त किया जाये और वह स्वच्छता से बनाया जाये तो उसे सभी वर्ण के लोग खा सकते हैं। आजकल होटलों में दलित, मुस्लिम व ईसाई सभी मत व जातियों के लोग पाकशाला में काम करते हैं और हमारे पुराने अन्धविश्वासी पौराणिक बन्धु व उनके परिवार के लोग बिना 'न नुच' के उस भोजन को ग्रहण करते हैं। यह महर्षि दयानन्द की विचारधारा का परिणाम है जिसे उन्होंने आज से एक सौ 140 वर्ष पहले प्रचलित कर दिया था। सरकारी कार्यालयों में हमारे दलित व अन्य मतों के बन्धु ऊंचे पदों पर कार्यरत हैं और हमारे परम्परावादी अन्धविश्वासी परिवारों के पण्डित कहलाने वाले बन्धु इनके अधीन कार्य करते हैं, यह गुण, कर्म व स्वभाव के कारण है जिसका शुभारम्भ व समर्थन महर्षि दयानन्द के द्वारा करने से इसका श्रेय उन्हीं को देना उचित होगा। हम यह भी अनुमान करते हैं कि मध्य काल में पण्डितों ने यदि स्त्रियों व शूद्रों को शिक्षा व अध्ययन से वंचित न किया होता तो अतीत में हमें कितनी अधिक संख्या में विद्वान व विदुषी श्रेष्ठ स्त्री-पुरुष मिले होते। हम यह अनुभव करते हैं कि आज भी जन्मना वर्णव्यवस्था जिसका आधुनिक रूप जन्मना जातिवाद है, समाप्त तो नहीं हुई है परन्तु यह अधिकांशतः अव्यवहारिक हो गई है। आज स्कूलों के प्रमाण पत्र के आधार पर बड़े सरकारी पद मिलते हैं जिसमें ब्राह्मणों सहित क्षत्रिय, वैश्य, पिछड़े व दलित सभी वर्गों के लोग होते हैं। इन प्रमाण पत्रों के आधार पर ही इन्हें सरकारी नौकरियां मिलती हैं तथा यह अपनी शिक्षा व पद से ही पहचाने जाते हैं, अर्थात् सरकारी अधिकारी, डाक्टर, अभियन्ता, शिक्षक, नर्स आदि। एक प्रकार से आज मनुष्य की जो योग्यता है और वह जो कार्य करता है, वही उसकी पहचान व वर्ण बन गया है। इसमें गति इसलिए मन्द है कि आज दलित वर्ग के लोग सरकारी लाभ उठाने के लिए इस जन्मना जाति व्यवस्था अर्थात् मरण व्यवस्था को जारी रखना चाहते हैं। इससे भेदभाव दूर करने में कठिनाई हो रही है। वर्तमान सामाजिक स्थिति भले ही उन्नत वैदिक काल के अनुरूप न हो परन्तु मध्यकाल से तो कहीं अधिक श्रेयस्कर व उत्तम है। हम अनुभव करते हैं कि कुछ पीढ़ियों के बाद वर्तमान समाज में जाति, वर्ण व सम्प्रदाय आदि के नाम पर जो विषमतायें हैं, वह सर्वथा दूर हो जायेगी। यदि ऐसा भी हो जाता है तो इससे समाज भली भांति संचालित हो सकता है। इसे वर्तमान व्यवस्था को आजकल के समय व युग के अनुरूप वर्ण व्यवस्था कह सकते हैं जिसमें जाति सूचक शब्दों का प्रयोग बन्द होना आवश्यक है। ऐसा होने पर स्थिति और अधिक अनुकूल हो जायेगी और सामाजिक भेदभाव दूर होंगे। समस्या अब केवल एक ही शेष रहती है कि वैदिक काल में ब्राह्मण वर्ण का मुख्य कार्य वेदों की रक्षा, वेदों का अध्ययन, वेदों का शिक्षण व प्रचार, ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि का प्रचार व प्रसार करना था वह आजकल बन्द हो गया है। इसकी समाज व देश को अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए आर्य समाज व इसके गुरुकुलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ हि हम यह भी अनुभव करते हैं कि आर्य समाज के संगठन को समयानुकूल बनाने की आवश्यकता है जिसके विद्वानों को प्रयास करना चाहिये।

वैदिक वर्ण व्यवस्था सषष्ठि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल से कुछ पूर्व तक सर्वोत्कष्ट सामाजिक व्यवस्था के रूप में प्रचलित थी। इसका विकास रूप महाभारतोत्तर व मध्यकालीन जन्मना जाति व्यवस्था थी। इस जन्मना व्यवस्था का वर्तमान आधुनिक रूप पूर्व वर्णव्यवस्था व जन्मना जाति व्यवस्था का मिला-जुला रूप है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को हम वैदिक वर्ण व्यवस्था से श्रेष्ठ तो नहीं मानते परन्तु यह जन्मना जाति व्यवस्था से कहीं अधिक अच्छी है। आर्य हिन्दू धर्म के सभी विद्वानों और समाजशास्त्रियों को इस पर ध्यान देना चाहिये। आधुनिक सामाजिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये जिसमें कि पूज्यों की ही पूजा हो अपूज्यों की नहीं। समाज में भेदभाव, पक्षपात, अन्याय तथा छुआछूत का किसी भी रूप में व्यवहार नहीं होना चाहिये। इस लक्ष्य की प्राप्ति में आर्यसमाज की बहुत बड़ी भूमिका है। इस पर निरन्तर चिन्तन मनन होता रहना चाहिये। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

# ग्राम नेनोरा, जिला—मंदसौर ;मध्य प्रदेश में रजत जयन्ती समारोह का भव्य आयोजन

समारोह में देश के अनेक लब्ध प्रतिष्ठि विद्वान् भाग लेंगे

दिनांक 16 से 20 मई, 2015 तक

कार्यक्रम स्थल — सम्पूर्ण कार्यक्रम दयानन्द क्रीड़ास्थल,

आर्य समाज नेनोरा, पो.—सोनी, वाया पिपल्या मण्डी, मन्दसौर ;मध्य प्रदेश में सम्पन्न होगा

विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री सन् 1991 से 2014 तक अपने जन्म स्थान ग्राम नेनोरा, जिला—मन्दसौर ;मध्य प्रदेशद्वारा में प्रतिवर्ष वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार का आयोजन करते आ रहे हैं जो विगत 24 वर्षों से निरन्तर निर्विघ्न सम्पन्न होता रहा है इस वर्ष 16 से 20 मई, 2015 तक वेद पारायण यज्ञ का रजत जयन्ती महोत्सव विशाल समारोह के रूप में आयोजित किया जा रहा है इस 25वें विशाल यजुर्वेद पारायण यज्ञ में 25 दैनिक अग्निहोत्री परिवार, 25 यज्ञकुण्डों पर यजमान के रूप में विराजमान होकर यज्ञ को सम्पन्न करेंगे इस यजुर्वेद पारायण यज्ञ में लगभग 60 विद्वान्, संन्यासी, महात्मा, भजनोपदेशक उपस्थित रहेंगे इस विशाल यज्ञ में 250 किलो गाय का शु(देसी धीं 500 किलो सामग्री, 1000 किलो समिध, तथा 50 किलो चन्दन का उपयोग किया जायेगा रजत जयन्ती समारोह के अध्यक्ष पद को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा यज्ञ के ब्रह्मा के पद को डॉ. जयेन्द्र आचार्य नोएडा सुशोभित करेंगे इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधन स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल आमसेना के स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, सीकर, राजस्थानद्वारा से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधन श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, स्वामी सच्चिदानन्द ;यमुनानगरद्वा, स्वामी श्री(नन्द)अलीगढ़, स्वामी ब्रह्मानन्द ;कामारेड़डी, स्वामी सुधनन्द राउरकेला, स्वामी शान्तानन्द भुज, कच्छ, स्वामी धर्मश्वरानन्द मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. आदि संन्यासियों का आशीर्वाद एवं अनेक प्रतिष्ठित विद्वान् एवं नेताओं की शुभकामना व सत्प्रेरणा प्राप्त होगीं कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में निम्न महानुभाव पद पर रहे हैं — श्री नन्दलाल मीणा, जनजाति विकास मंत्री राजस्थान सरकार, श्री मिठाई लाल सिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई, श्री अरुण अबरोल, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई, प्रो विट्टलराव आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना आन्ध्र प्रदेश, श्री आनन्द कुमार, पश्चिम बंगाल, श्री खुशहालचन्द्र

आर्य कोलकाता, श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल गुजरात, श्री अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष सत्यार्थ प्रकाश स्मशति भवन न्यास, उदयपुर, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली, डॉ. कमलेश शास्त्री, अहमदाबाद, डॉ. वेदपाल, मेरठद्वा, डॉ. ज्यलन्त कुमार अमेठी, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत, डॉ. दीनानाथ शास्त्री, अमेठी, डॉनागेन्द्र कुमार, अयोध्या, श्री सुभाष वेदालंकार, जयपुर, डॉमिथिलेश आचार्य, मुम्बई, डॉ. रविन्द्र कुमार, हरिद्वार, डॉविषुमित्रा, नजीबाबाद, आचार्य दयासागर रायपुर, आचार्य जीवर्ण बांसवाड़ा, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, दिल्ली, आचार्य देशबन्धु शास्त्री, गुडगां, आचार्य मोक्षराज, अजमेरद्वा, श्री योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबादद्वा, श्री संजय याज्ञिक, मेरठद्वा, श्री संजय सत्यार्थी, पटना, पं. भानू प्रताप वेदालंकार, इंदौर, श्री प्रियव्रत दास, भुवनेश्वर, आचार्य उमाशंकर, सूरत, डॉ. पवित्रा वेदालंकार, हाथरसद्वा, डॉ. प्रियम्बदा वेद भारती, नजीबाबादद्वा, डॉ. सीमा, चित्तोड़गढ़द्वा, आचार्य सूर्या देवी शिवगंज, श्रीमती मिथिलेश शास्त्री, हरिद्वार, श्रीमती कविता आर्या, दिल्ली, श्रीमती शन्मो देवी भुवनेश्वर, श्रीमती संध्या आर्या, गोण्डा, सुश्री मनीषा शास्त्री, कल्पना शास्त्री, वेदमुनि, भरतपुर आनन्द मुनि, ब्रह्मचारी सत्यकाम, रोहतक, पं. ईश्वर मित्रा शास्त्री, मुम्बई, पं. धर्मधर, मुम्बई, श्री सत्यपाल मधुर, दिल्लीद्वा श्री नरेश दत्त बिजनौर, श्री दिनेश दत्त, दिल्लीद्वा, श्री वीरेन्द्र मिश्रा, मुम्बई श्री मामचन्द दीपचन्द हरिद्वार श्री कैलाश कर्मठ, कोलकाताद्वा, श्री सत्यपाल सरल देहरादून, श्री भानू प्रकाश, बरेली श्री धनश्याम प्रेमी, मुजफ्फरपुरपुरद्वा, श्री कुलदीप आर्य, बिजनौरद्वा, श्री श्यामवीर राघव दिल्ली श्री भूपेन्द्र प्रेमी, खतौली, श्री भीष्म कुमार बिजनौर श्री अमर सिंह व्यावर, श्री केशवदेव, सुमेरपुर श्री सुखवीर विश्वकर्मा, सहारनपुर, श्री योगेश कुमार मुम्बई श्रीमती सुमित्रा सहारनपुर आदि भजनोपदेशक, विद्वान्, महात्मा, संन्यासी पधर रहे हैं जिनके उपदेशों से श्रोतागण लाभान्वित होंगे

## विस्तृत कार्यक्रम

16 मई, 2015 सांयकाल 4 से 6बजे तक विशाल शोभा यात्रा  
स्थान – पिपल्या मण्डी  
सम्बोधन – 6.30 से 7.30 बजे तक स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द 'सांसद', श्री नन्दलाल मीणा 'मंत्री राजस्थान सरकार'  
17 मई, 2015 आर्य युवक सम्मेलन दोपहर 1 से 3 बजे तक अध्यक्ष – स्वामी धर्मेश्वरानन्द, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र संयोजक – दयानन्द पाटीदार मुख्य अतिथि – आचार्य वेद प्रकाश

श्रोत्रिय, डॉ. नागेन्द्र कुमार आचार्य प्रमुख वक्ता – डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री, अहमदाबाद 18 मई, 2015 आर्य महिला सम्मेलन दोपहर 1 से 3 बजे तक अध्यक्षा – डॉ. प्रियम्बदा वेद भारती संयोजिका – सुदक्षणा शास्त्री मुख्य अतिथि डॉ. पवित्रा वेदालंकार, श्रीमती सन्नो देवी प्रमुख वक्ता – आचार्या सूर्या देवी, डॉ. सीमा, श्रीमती संध्या आर्या 19 मई, 2015 सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन दोपहर 1 से 3 बजे तक

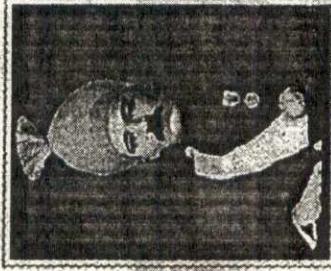
अध्यक्ष – स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा संयोजक – जीववध 'न शास्त्री मुख्य अतिथि: श्री मिठाई लाल सिंह, श्री अशोक आर्य, श्री अरूण अबरोल, श्री दीनदयाल गुप्ता प्रमुख वक्ता श्री सत्यव्रत सामवेदी जयपुर 20 मई, 2015 प्रातः 7.30 से 10 बजे तक भजन, प्रवचन, आशीर्वाद एवं सम्मान 10 से 11.30 बजे तक प्रीतभोज 12.00 बजे

### अपील

यह रजत जयन्ती समारोह निःसंदेह एक राष्ट्रीय सम्मेलन के रूप में आयोजित किया जा रहा है आर्य समाज के जाने-माने संन्यासी, नेता, विद्वान, भजनोपदेशक आमंत्रित किये गये हैं और अधिकांश पहुंच भी रहे हैं उनकी स्वीकश्ति प्राप्त हो चुकी हैं सम्मेलन को भव्य एवं पूर्णरूप से सपफल बनाने के लिए आर्यजनों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप तथा कार्यक्रम की एक शानदार झलक अवश्य देखें विदित हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधन स्वामी आर्यवेश जी ने जिस तेजी के साथ सार्वदेशिक सभा के तत्वावधन में देश के ज्वलन्त मुद्दों को लेकर वेद प्रचार जन चेतना यात्रा के माध्यम से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, अधिकारियों, उपदेशकों एवं वानप्रस्थियों व संन्यासियों को सक्रिय करके पूरे देश में प्रचार का जो बिगुल बजाया है उससे एक आशा पूरे आर्य जगत में जाग रही है कि वेद प्रचार के माध्यम से न केवल आर्य समाज का नया रूप उभर कर सामने आयेगा बल्कि कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अन्धविश्वास, धर्मिक पाखण्ड तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के विरु (देश में जबरदस्त चेतना पैदा होगी और इसका श्रेय आर्य समाज को मिलेगा) आर्य समाज के अतिरिक्त कोई भी संगठन इन मुद्दों पर कार्य नहीं कर रहा हैं स्वामी जी का कहना है कि आर्य समाज के सभी घटक संगठित होकर यदि कार्य करने लगें तो बहुत शीघ्र आर्य समाज को वही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हो जायेगा जो राष्ट्रीय आन्दोलन और हैदराबाद सत्याग्रह के समय में प्राप्त थां अतः आर्यजन आगे बढ़ें और सार्वदेशिक सभा के तत्वावधन में होने वाले आन्दोलनों में सक्रिय होकर भाग लें

आयोजक – डॉ. सोमदेव शास्त्री, सौ. सुदक्षिणा शास्त्री, सौ. निमिता, प्रणव एवं अनिलध्द प्रबन्धक – आर्य समाज नेनोरा, रतन सिंह शक्तावत, उपप्रधान माधुलाल पाटीदार, कोषाध्यक्ष कुंजीलाल पाटीदार, मंत्री रामेश्वर आर्य

విరంకుశ నిజాంకు ప్రశ్నసల్యా?



ವಾರ್ತೆ ನುಜಾ ಪ್ರೇರಣ್ಯಂ ನಾಮವಾಲಿತ್ವಮೇ. ಭಾವಿಂದರ್ಶ್ಯೇ ಸಾಯಕ  
 ತ್ರಾಣ ದರ್ಶಕಾರ್ಥ ಸೈರವಿಪರ್ವದ ಚೌರಾಯ. ರಳ್ಳಿ ಚೆಪ್ಪಿನ ಪ್ರಾಣ ವಿನಂ  
 ಲಾಸ್ಯದ ಅಂತಿಮ ಸ್ಥಾನ ಮುದುಳಬಾಗೆ ರಳ್ಳಿ ಶಾರೀಸಾನ್  
 ವಿರಂಘ ವಿವುದಾಯಾದು. ಏರಿ ಬಾಂಬಳ್ಯಾ ಸರ್ವಾ ಹೊಸಿದಿ  
 ಅಂದರ್ಗಂಳ್ಯೇ ಈಸ್ಟ್ ಕೊಂಡ ಲಕ್ಷ್ಯ ಬಾಹುಭೀರು. ಹಾನಾ  
 ಸಂದಿ ನಾಲ್ಕಿ ಪಂಷಾಯ. ಅಷ್ಟಾಚ್ ವಿಗ್ರಹವ್ಯಾ ಕೊಂಡಬ್ಯಾದ್  
 ಪೆಡಕಾಮಾಯಾದು. ಸಂತಿಹಣೆ. ಮರಿ. ಅರ್ಕಿಂಗ್ ಸಾಜಾ  
 ರಿನ ಚಂದ್ರಾವ್ಯಕ ಸರ್ವಾಕರಣಿವ ಬಾಹುಭ್ಯ ಹೊಸಿಕಾರು  
 ಅಂತಾರ್ ಲೇಕ ವಿಗ್ರಹವ್ಯಾ ಪೆಟ್ಟಿದು ಅಸ್ಟ್ರೋರ್ಮ್ ಪೂಡ್ಯಾ  
 ಪರ್ವಿತ್ ಪಾರವತ್, ಕ್ರಿಂಕಲ್ ವೆದರಿ ಸಾಯಕತ್ಯಂತ ಕೆಂಡ್ರಲೈನ್ ಯಾದು  
 ಕಲು ನಲ್ಲಿವೈಪುಳಾ ದುರ್ಭಿಕ್ ರಳ್ಳಿ ಪಾಕಿಸ್ತಾನ್ ಪಾರಿಪ್ರಯಾ  
 ವೈಜಂ ಮೂಡು ನಾಲ್ಕಾಗ್ರಜಲ್ಲೋನ್ 1948 ನಡೆಂಬರು 11ನು

చేరుకొన్నాడు. నైజాం రాష్ట్ర ప్రజలకు స్వేచ్ఛ లభించిన రోజు అదే. రాష్ట్రం నిరంతరం నుండి విమోచనవమయింది గడ్డా! ఆలాగే అన్నాడు అందరూ, అన్ని పార్టీలాపరూనూ. ముఖ్యంగా నీపే వారు విమోచన దినోత్సవం రెగ్యులర్గా అందోళన జరి పెచురు. కానీ, ఈ మర్యాద ప్రింస్ మారింది. 11 నిష్పంబిల్సు విలీనుం అంటున్నాడు, కమ్యూనిస్టులు కూడా ముఖ్యంలను దువ్వాలని, వారి ఓట్లు రాబట్టాలని తావుర్తయి తప్ప వేరే ఏమీ లేదు. నవాబు ఒక దుర్మార్గుడు, వేదలకు శత్రువు. మున్సిపలంతా నవాబే గోప్యవాడంబారా! నవాబు హాయాలో మున్సిపలు ఎందు సుఖపడ్డారు కేవలం ఓట్లుకోను వారిని దుష్టినా, ఓల్డ్ సీనీలో ఏ పార్టీ అయినా లాభపడుతున్నదా? ఒకైనే సోదరులు తమ నాయకత్వాన్ని కపాకుపడునికి తలాన్ని వాడుతంటున్నారుంటే. 1947లో సుంకర నశ్శూలా యిఱ, వానికి భాస్ఫూరూప గాయి రానిన మా భూమి నాటకు ప్రశ్నల్లో ఎలా శ్రేతర్ణాన్ని తెచ్చింది. నైజాం దుప్పరి పొలనను ఎందగట్టింది. అందలోని పోట బుడినక బండి కట్టే... నాజీలి మించినేడా... గేల్పొండ విల్లూలో గీతకడతు కడకో అంటూ ఎలా ఉద్దేశపరిచిందే, అంర పాపుల్ర అయింది. కేనీళ్ల గారు అప్పడు పటులేదు తెండి.

## **'क्या ईश्वर है?'**

मनमोहन कुमार आर्य,

क्या ईश्वर है, है या नहीं? इस युक्ति व तर्क से देखते हैं कि यथार्थ स्थिति क्या है? इससे पूर्व कि ईश्वर की चर्चा करें हम पहले मनुष्य जीवन की चर्चा करते हैं। लोग हमसे पूछते कि आप कौन हैं? हम उत्तर हैं कि मैं मनमोहन हूं। यहाँ मैं स्वयं अर्थात् अपने अस्तित्व को स्वीकार कर रहा हूं और यह नहीं कह रहा हूं कि मैं नहीं हूं मैं कह रहा हूं कि मैं हूं और मेरा नाम मनमोहन है। अब यदि मेरा अस्तित्व है तो यह अस्तित्व कब व कैसे अस्तित्व में आया? हम समझते हैं कि संसार में किसी मनुष्य को यह भ्रान्ति नहीं है कि उसका अस्तित्व नहीं है। हमारा अस्तित्व कब व कैसे उत्पन्न हुआ, इस पर विचार करने पर पता लगता है कि अमुक तिथि को हमारा जन्म हुआ था। यह वह तिथि है जिसका ज्ञान हमें अपने माता पिता से व पाठशाला आदि के अभिलेख से हुआ है जिसे हमारे माता-पिता अंकित करते हैं। माता-पिता से जन्म से पूर्व हम माता के गर्भ में रहते हैं। ज्ञान-विज्ञान से ज्ञात होता है कि वहाँ भी हमारा प्रवास हिन्दी महीनों के अनुसार पूरे 10 माह और अंग्रेजी के महीनों के अनुसार लगभग 9 माह का होता है। इस 10 माह व 9 माह से पूर्व हमारा अस्तित्व था या नहीं? विज्ञान के पास इसका समुचित उत्तर नहीं है। विज्ञान का एक नियम है कि कारण के बिना कार्य नहीं होता अर्थात् कार्य के लिए कारण की आवश्यकता है। यदि माता के गर्भ में हम आयें तो दो सम्भावनायें होती हैं कि या तो कोई एक अत्यन्त सूक्ष्म तत्व कहीं से अर्थात् आकश या वायु से आया या फिर वह वहीं उत्पन्न हुआ हो। इसके लिए हमें अपने शरीर पर ध्यान देना होगा। जीवित अवस्था में हमारा शरीर दो भिन्न प्रकृति वाले पदार्थों का सम्मिलित रूप होता है। एक चेतन तत्व है और दूसरा जड़ तत्व। यह जड़ तत्व तो अन्नमय होता है, जो माता व हमारे अन्नमय भोजन का परिणाम है और दूसरा चेतन तत्व एक अत्यन्त सूक्ष्म तत्व है जो जन्म से मृत्यु पर्यन्त एक समान व एक आकार प्रकार वाला रहता है। इस चेतन तत्व का स्वरूप ज्ञान व कर्म अथवा गति है जो कि जड़ पदार्थों के स्वरूप वा गुणों से सर्वथा भिन्न है। अन्न जहां प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं का परिणाम हैं वहाँ यह सूक्ष्म चेतन तत्व आत्मा प्रकृति का परिणाम न होकर इससे सर्वथा भिन्न व पृथक तत्व है। इस आत्मा के लिए ही हमें हमारा यह मनुष्य शरीर मिला हुआ अनुभव होता है। इसका निर्माण कैसा हुआ। इसका उत्तर किसी के पास नहीं। वैज्ञानिकों ने भी इस पर ध्यान नहीं दिया या यों कहिये कि यह विज्ञान का विषय ही नहीं है। यह इस कारण कि विज्ञान तो भौतिक पदार्थों का अध्ययन कर उसका ज्ञान कराता है। शरीर में चेतन तत्व जिसे आत्मा कहते हैं, वह अभौतिक व चेतन है जो विज्ञान के अध्ययन से परे है। इस चेतन तत्व जीवात्मा के अध्ययन के लिए हमें वेद और उपनिषदों की शरण लेनी पड़ती है जहां जीवात्मा को शाश्वत व सनातन अर्थात् नित्य कहा गया है। यह नित्य पदार्थ अनादि, अनुत्पन्न होने के कारण अमर व अवनिशी होता है अर्थात् इसका अस्तित्व हमेशा बना रहेगा।

शेष अगले अंक में

## ■ దుర్గినేని సత్యనారాయణరావు

రావుపరి అవార్య గ్రహిత



విభిన్న సంఘర్షాలలో దేశప్రముఖులతో విరల్ రావు ఆర్జు  
देश के प्रमुख लोगों के साथ अनेक संदर्भों में लिए चित्रों में श्री  
विट्टल राव आर्य



- 1970-71 లోను అర్థాన్ని ప్రారంభించిన దినాల్లో కొన్ని విషయాల ప్రారంభమే ఈ సంస్కరణ చేయబడినది.
- 1971 జూలై తేదీన ప్రారంభించిన దినాల్లో కొన్ని విషయాల ప్రారంభమే ఈ సంస్కరణ చేయబడినది.

• 1972లో ఉన్నాయాలు కు  
• 1974లో ఇంద్రా జీలో సెర్వ

ప్రాణికారు. తరువాత అందులు మెచ్చకు,  
ప్రాణినియు లెక్కయ్యగా.. ఆ తరువా-

● 1977 లో విషయాలు

సంఘర్షించి పెనుం అనే నీ  
మాటలాడుకున్న జయతా పార్శ్వ విషయాలు  
ప్రాగ్తికాల తెలుగు భాషకులు

2008లో అయిన్న కలిగే  
లో చేరు.

- 2010 మే నుంచి టీఎర్ కు పునర్జీవాదు.

ప్రాణిల్లో ఎంటు కుటుంబమని తెలుగు వార్తాలో అనుమతి మార్కులు చేసి నిర్వహిస్తాయి.

• 2009-10 ମେଲ୍ଲିରେ ଜରିଗାଏନ୍ତିରେ ଅଦ୍ୟାମୁଦ୍ରାରେ ୩୦ ମେଟ୍ରୋ ମିଟର୍

● ప్రస్తుతం చీఫర్మేన్స్ కీ

ପ୍ରକାଶକ  
ବ୍ୟାପକୀୟ

1925 ମୁଣ୍ଡି 1948 ମେରୁ ଅର୍ଥାତ୍ ଯାତମାଳାମ ଦେଖିଲୁ ପକ୍ଷୀଙ୍କ ନେତୃତ୍ବ

ముఖ్యాలాడ బిడ్, గుల్బాల, రాబుచూర్కోపేసు మరిఉన్నాడ  
జలాలైన కోల్కతాబాబు, బీ.డి.ఎర్రాబాబు, నాంద్, ఆల్గు  
అంగుల్లు అంగుల్లు అంగుల్లు అంగుల్లు అంగుల్లు అంగుల్లు

କୁଣ୍ଡଳ ପାତାରେ ଶୁଭାଚାରଙ୍ଗା ପାତାରାହ ଏ ନାହିଁ କିମ୍ବାର  
କୁଣ୍ଡଳ ପାତାରେ ଶୁଭାଚାରଙ୍ଗା ପାତାରାହ ଏ ନାହିଁ କିମ୍ବାର

ప్రాణికి విషమయిన అవస్థలలో విషమయిన అనుభూతిలు ఉన్నాయి. అదినుమత్తు కొరక్కలాపాల్గొచ్చి విషమయిన అవస్థలలో విషమయిన అనుభూతిలు ఉన్నాయి.

అర్థాన్నమాణి పుట్ట తక్కితుడు యాశు. నెర్కలాస్చున నియూటన్ క్రొస్సిం రాత్రిమధ్య ప్రమాదు.

ముందు తల్లికిలో ఉండుటా నాన్చు. కారం పేసుడు. పెడు అల్సు లేదా వెంటిన్ అల్సు దారా కుష్టవ్యాధి. నేను అల్సు కర్పరేజ్ చుట్టు వుంచు అన్న పూర్వమంతి పోపుడు క్రొన్ బాలా శ్రమించురు. నాచి

ప్రతికూల రాట్చున్నాడు. దూరం ఉదికేయాడని, ఒ నుంచి ప్రతి  
ప్రతికూల రాట్చున్నాడు. వీరు సేవనాడని. బార్బర్ డైన్ వేస్వాడని.

ప్రాణికి అనగ్గి వచ్చి పట్ల కొను యాస్తు తెఱ్ఱమ. 20 రోజులు అక్కడ కొండి 15 రూపాయిలు అధ్యయన కేసీ రందు శుశరా కుట్టి ప్రాణి.

આર્ય જીવન 03-05-2015 Registered-Reg. No.HD/783/2015-17

RNI.No.52990/93

# ఆર્ય જીવન

હોંટી-તેલગુ બ્લોગ્ઝ પ્રક્રિક

ఆર્ય પ્રતીકાળ સભ આપ્ટ-ટેલાગુણ, D.No. 4-2-15

મુખ્યાંશુ દરમાનંદ માર્ગમાં સંજ્ઞાની બકરી, હૈદરાબાદ-95,

phone No. 040 - 24753827, 66758707, Fax: 040-24557946

સંપાદકલ - વિરલેન્સ આર્ય પ્રથાન્ સભ

વિભિન્ન સંધરાખાલ્લો

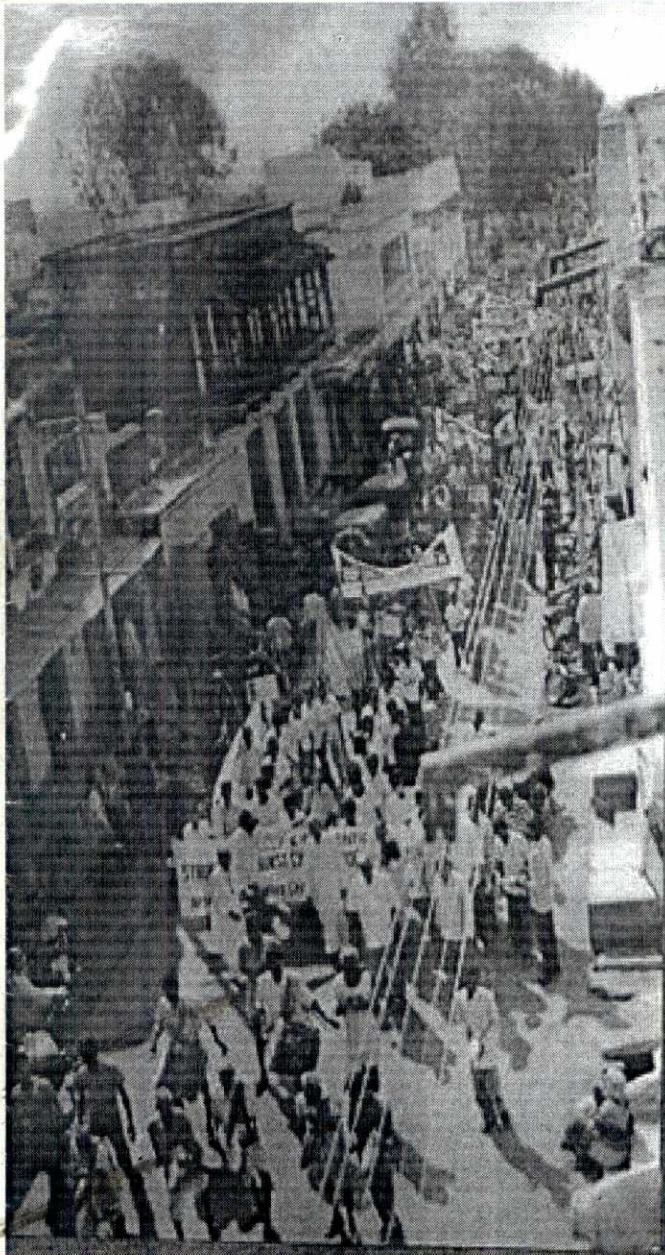
દેશ પ્રમુખાલ્લો

વિરલ રાનુ આર્ય



**ARYA WITH  
NOBEL LAUREATE  
SHRI KAILASH SATYARTHI**

देश के प्रमुख लोगों के साथ  
अनेक संदर्भों में लिए चित्रों में  
श्री विठ्ठलराव आर्य



THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN  
AGREEABLE TO THE EDITOR

THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE  
Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com

સંપાદકલ : આર્યજીવન છુટ્ટુંબ્લુંબુન્નાંલાંટું-ટેલાગુણ માર્ગમાં હૈદરાબાદ-95 Ph.: 24753827, Email : aryavithal@yahoo.co.in

સંપાદક: શ્રી વિઠ્ઠલ રાવ આર્ય પ્રધાન સભા ને સભા કી ઓર સે આકૃતિ પ્રેસ ચિકડપણી મેં મુદ્રિત કરવા કર પ્રકાશિત કિયા।

પ્રકાશક: આર્ય પ્રતિનિધિ સભા આં.પ્ર.-નેલંગાના સુલ્તાન બાજાર, હૈદરાબાદ નેલંગાના-૧૫